26 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

कल्प पहले की स्मृति द्वारा बाप के दिलतख्तनशीन बनने का अनुभव

➢➢ रूहानी मिलन की अनुभूति

➳ _ ➳ स्नेह सागर को दिल में बिठा कर, सांसों में समा कर

→ मैं ज्ञान गंगा डूबती जा रही हूं

→ समाती जा रही हूं, इस रूहानी मिलन में

→ नैनो से अश्रुधारा बह रही है

→ स्नेह मिलन हो रहा है

■ बाबा के प्यार का अनुभव बड़ा निराला है

➳ _ ➳ दिव्य बुद्धि द्वारा पहचानना

→ मैं रूहानी रूह जान चुकी हूं

→ अपने आप को

→ अपने प्राण प्यारे को

→ अपने पिता को, सखा को

■ कल्प पहले वाला अनुभव हो रहा है

➢➢ स्नेह में समाई लवलीन आत्मा हूं

➳ _ ➳ झूल रही हूं झूला

→ सुख का

→ प्रेम का

→ खुशी का

→ आनन्द का

■ स्मृति में आ गई है पुरानी पहचान

➳ _ ➳ कल्प पहले भी बनी थी

→ बाप समान आत्मा

→ बाप में समाई आत्मा

→ अखुट खजाना की अधिकारी आत्मा

→ वरदानी मूर्त आत्मा

■ मुझे स्वयं बापदादा ने सजाया है वरदानों से

➢➢ मैं चैतन्य शक्तिशाली आत्मा हूं

➳ _ ➳ गुलाम नहीं मालिक हूं

→ कमजोर नहीं अधिकारी आत्मा हूं

→ जो सोचा वह करने वाली आत्मा हूं

→ विघ्न विनाशक आत्मा हूं

■ विराट स्वरूप धारण करती हूं, अपने विघ्नों पर

➳ _ ➳ समाप्त कर रही हूं

→ अपने पुराने स्वभाव को

→ कलयुगी संस्कारों को

→ अलबेलेपन को

■ परिवर्तन की शक्ति द्वारा समाप्त कर रही हूं कमजोरियों को

➳ _ ➳ मनमनाभव के महामन्त्र द्वारा

➳ _ ➳ मास्टर सर्व शक्तिवान बन रही हूं

➳ _ ➳ अपना हर सेकंड, हर संकल्प सफल कर रही हूं बाप समान बनने में

➳ _ ➳ त्याग और तपस्या द्वारा सफलता मूर्त बनती जा रही हूं

→ मान और शान अब मुझे आकर्षित नही करते

→ सच्ची सेवाधारी बन कार्य को करती हूं

→ अपनी दिल पूरी तरह उसको सौंप दी है

→ ट्रस्टी बन सब कार्यों को संपन्न कर रही हूं

→ बाबा के स्नेह से सज मैं सम्पन्न आत्मा बनती जा रही हूं

■ स्नेह सागर की आज्ञाकारी बन कार्य करती हूं

■ विश्व कल्याण की भावना रख एवर रेडी बनती जा रही हूं

■ बाप समान विश्व कल्याणकारी स्वरूप होता जा रहा है मेरा

■ बाबा की दिलतख्तनशीं बन उड़ती जा रही हूं